आर्योदय
ARYODAYE

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

Aryodaye Weekly No. 282 | ARYA SABHA MAURITIUS | *18th Jan. to 30th Jan. 2014*

Vishwa Bandhutva / La Fraternité Universelle

ओ३म् ।। यस्मिन्त्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः ।
तत्र को मोहः कः शोकऽएकत्वमनुपश्यतः ।।

Om ! Yasminta sarvāni bhutāni ātmaya vābhuda vijānataha.
Tatra ko moha kaha shoka ekatvamanu pashyataha.

Yajur Véda 40/7

Glossaire / Shabdārtha

Yasmin – en qui, l'état auquel il se trouve, **vijānataha** – à cet érudit, ce savant, ce sage ou cet intellectuel, **sarvāni bhutāni** – toutes les créatures de la terre, y compris l'homme, **Atmā evaha** – comme son âme, ou comme soi-même dans le bonheur, dans la tristesse ou dans le Malheur, **Abhuta** – cela arrive ou cela se passe, **Tatra** – dans cette circonstance, à ce moment, **Ekatvam anupashyataha** – celui ou celle qui n'aperçoit ou qui ne voit que les Seigneur en soi même et aussi bien que dans toutes les autres créatures du monde, **kaha moha, kaha shokaha** - quel attachement et quelle peine ou tristesse qui pourront l'affliger? Rien ne l'impressionnera, car il sera toujours au-dessus de tout.

Interprétation / Anushilan

Dans ce mantra du Yajur Véda, le Seigneur nous prêche « La Fraternité Universelle ». Il recommande vivement qu'il y ait parmi tous les citoyens du monde la culture de l'unité, de la compréhension, de l'amitié, du respect mutuel et de la fraternité. Il veut aussi faire prévaloir partout l'esprit de coopération, d'entraide, de l'amour de son prochain comme soi-même, et de la magnanimité.

Cependant l'adoption de toutes ces attitudes positives en nous, n'est possible que par la renonciation ou le sacrifice de tous nos mauvais penchants tels que notre égo, et autres défauts ou qualités indésirables.

Le but ultime de l'adoption de tous ces nobles principes par l'homme dans sa vie vise à faire de ce monde un havre de paix, de l'unité, de l'amour, de prospérité, de fraternité et d'égalité voire un paradis. Conséquemment tous les citoyens du monde entier arriveront à comprendre qu'ils sont tous les membres d'une seule (grande) famille de l'humanité et ils vont se dire : «Le monde entier n'est qu'une seule famille» ou **«Vasudhaïva Kutumbakam»** en sanskrit -- Cela traduit exactement le fond de l'enseignement des Védas, en d'autres mots, la culture Védique ou Hindoue.

Mais, il nous faut en même temps se méfier des gens qui pratiquent toutes sortes de discrimination, de division, d'injustice ou d'atrocité envers les autres. Ils sont considérés comme des gens inférieurs et méprisables de la société.

Dans ce même contexte nous ouvrons une parenthèse sur ce que pensent les sages, les érudits, les savants et les personnes éclairées. De par leur grandeur d'âme ils considèrent toutes les créatures de la terre, y compris l'homme, comme eux-mêmes, c'est-à-dire, comme leurs propres âmes.

Ils voient le Seigneur dans tous les êtres vivants, et partout dans le monde, y compris dans tous les éléments de la nature.

De telles personnes ne sont jamais affligées par la malheur, la peine ou la tristesse et ne manifestent aucun attachement avec quiconque. Elles sont immuables et au dessus de tout.

De ce fait, ces saints hommes se rapprochent du Seigneur pour la méditation profonde et peuvent finalement atteindre «La Félicité Eternelle » / « La Béatitude » ou « Moksha» (en Hindi).

N. Ghoorah

ARYA SABHA MAURITIUS

Arya Bhawan, 1 Maharishi Dayanand Street, Port-Louis
Tel : +230 2122730 ; Fax : +230 2103778, E-mail : aryamu@intnet.mu

ENROLLMENT FOR FUTURE VEDIC MISSIONARIES 2014-2017

Interested parties wishing to enrol as Future Vedic Missionaries are hereby requested to fill the admission forms available at the reception desk of the Arya Sabha Mauritius, 1, Maharshi Dayanand Street, Champ de Mars, Port Louis or may be downloaded from our website *'www.aryasabhamauritius.mu'* by latest the 15th of February 2014.

COURSES OFFERED FULL TIME

Duration : Three Years

Entry Requirements :

(1) School Certificate with 5 passes, including English, Hindi or French

(2) 2A LEVEL in Hindi and Hinduism.

For further information please call us on Phone No. +230 2122730 or +230 57601105.

Students can also visit our website : *www.aryasabhamauritius.mu*

सम्पादकीय

दुर्व्यसनों का दुष्परिणाम

एक आदमी जब अच्छे लोगों से मेल-मिलाप करता है, तब वह धीरे-धीरे सज्जन बन जाता है, अपनी सज्जनता का प्रमाण देकर वह अच्छा कर्म करता रहता है। दुर्भाग्यवश अगर वह बुरे लोगों की संगत करने लगता है, तो वह दुष्ट इंसान बनकर दुर्व्यसनों में फँसता जाता है। सत्संग करने वाला व्यक्ति अपने सद्गुणों तथा अच्छे व्यवहारों से श्रेष्ठ मानव कहलाता है और कुसंग में पड़ने से वह नीच प्राणी की श्रेणी में आ जाता है ।

दुर्व्यसनों में फँसना बड़ा आसान होता है, परन्तु उन बुरी आदतों से छुटकारा पाना बड़ा मुश्किल हो जाता है। यह देखा जाता है कि जिसे किसी दुर्व्यसन की लत लग जाती है वह बरबादी की ओर बढ़ता जाता है और उसका परिवार तरह-तरह के संकटों में पड़ जाता है। उस व्यक्ति की दुष्टता के कारण उसका सुखी परिवार दुखी हो जाता है ।

दुर्व्यसन अनेक प्रकार के होते हैं जैसे कि चोरी, जुआखोरी, नशेबाज़ी, धोखेबाज़ी, व्यभिचार, लालच इत्यादि। इन दुर्व्यसनों से व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र को बड़ी हानि होती है। इनसे लाभ किसी को नहीं होता है। कई सम्पत्तिशाली भी इन दुर्व्यसनों में पड़कर कंगाल हो जाते हैं। इसीलिए हमारे धार्मिक ग्रन्थों में इन खराब आदतों से दूर रहने की शिक्षा दी गई ।

एक नशेबाज़ी अपने धन-दौलत लुटाकर अपने स्वस्थ शरीर को अस्वस्थ बना देता है। जुआखोरी जुए के पीछे जीतने की लालच में अपनी सारी सम्पत्ति गवाँकर भिखारी की तरह ज़िन्दगी गुज़ारने लगता है । चोरी करने की लत लग जाने से चोर एक दिन जेल में चला जाता है। इसी प्रकार एक व्यभिचारी अपने किए हुए कुकर्मों के बुरे फल भोगता है । लालच एक बुरी बला है, जो लालची होता है, उसे कभी न कभी लेने के देने पड़ता है। इसी तरह जो भी दुष्ट, अधर्मी, दुर्व्यसनी होते हैं, वे अपने कुकर्मों का फल अवश्य भोगते हैं ।

आजकल हमारे देश में शराबियों, की वृद्धि होती जा रही हैं। मादक-द्रव्यों का धंधा गरम होता जा रहा है। इसी प्रकार जुआखाने बढ़ते जा रहे हैं। कसिनो में कितने लोग अपना धन गवां रहे हैं, घुड़दौड़ में सारी सम्पति लुटा रहे हैं। कई धोखेबाजी भोले-भाले लोगों को धोखे से बरबाद कर रहे हैं। व्यभिचारी अपने दर्दनाक व्यवहारों से नागरिकों को चैन से जीने का अधिकार छिन रहे हैं। हमारी सरकार की ओर से तो इन बदमाशों, चोरों, लुटेरों, नशेखोरों तथा दुष्टों की रोकथाम में पूरी कोशिश की जा रही है। हमें भी अपने परिवार के हर एक सदस्य को दुर्व्यसनों और कुकर्मों से दूर रखने का पूरा प्रयत्न करना चाहिए, ताकि वह चरित्रवान बनकर अपने परिवारों में सुख, शान्ति और आनन्द का राज्य स्थापित कर सके।

यह सर्वमान्य है कि सज्जनों की वृद्धि होने से सुखी परिवार, उत्तम समाज और उन्नतिशील राष्ट्र का निर्माण होता है। दुष्ट जनों के बुरे कर्मों और व्यवहारों से परिवार, समाज और राष्ट्र पतनावस्था में पहुँच जाते हैं। इस सुन्दर देश में सुख, शान्ति और उन्नति स्थापित करने के लिए वैदिक धर्म के प्रचारों द्वारा भटके हुए अल्पज्ञों को सही मार्गदर्शन करना है ताकि मोरिशसवासी कुसंग से हटकर सत्संग का लाभ उठाएँ। हमारे समस्त आर्य पुरोहित और पुरोहिताएँ, सभी शाखा समाजों के अधिकारीगण अगर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में निस्वार्थ भाव से पूरा योगदान देंगे तो हमारे देश में आर्य सदस्यों की वृद्धि अवश्य होती जाएगी। श्रेष्ठ, सभ्य, ईमानदार, पुरुषार्थी, संयमी, न्यायप्रिय, सुशील और धार्मिक जन बढ़ते जाएँगे और नागरिकों के दुर्गुण दूर होते जाएँगे। वे अपने हानिकारक दुर्व्यसनों, अभद्र व्यवहारों और सारे छल कपट से मुँह मोड़ कर श्रेष्ठ नागरिक बनने का प्रमाण देंगे तब जाकर यहाँ सुख, शांति तथा आनन्द से जीने का सौभाग्य प्राप्त होगा ।

बालचन्द तानाकूर

अस्सी बसन्त पार कर चुके

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के, आर्य रत्न

सोमवार दिनांक १४.०१.१४ को प्रातः ठीक ९.०० बजे त्रियोले के तीन बुतिक आर्य मंदिर में संक्रान्ति पर्व भव्य रूप से मनाया गया। उसी अवसर पर विशेष यज्ञ द्वारा एक वयोवृद्ध सदस्य श्री धनीलाल सोब्रन की अस्सीवीं वर्षगाँठ मनायी गई। मौक़े पर आर्य सभा के प्रधान, बालचन्द तानाकूर, उपप्रधान डॉ० उदय नारायण गंगू, उपप्रधान सत्यदेव प्रीतम ने अपनी उपस्थिति देकर कार्य की शोभा बढ़ाई और उन्होंने आमंत्रित लोगों को सम्बोधित किया।

श्री विद्यानन्द सोब्रन का जन्म साधारण गरीब माँ-बाप के यहाँ वाक्वा शहर के उपनगर आलेब्रियाँ में १९३४ के जनवरी १४ तारीख संक्रान्ति के मौके पर हुआ था। ७ वर्ष के हुए तो सिर से पिता का साया उठ गया। स्कूली शिक्षा पूरी नहीं हो सकी। बालावस्था में ही माँ के साथ खेतों में काम करना पड़ा । बाद में आँरियेता छोड़कर माँ के साथ त्रियोले आ गये और अब तक वहीं रहते हैं।

२२ वर्ष की आयु में विवाह किया और उस दम्पति से पाँच संतानें हुईं चार लड़कियाँ और एक लड़का। आज सभी सुखी पारिवारिक जीवन जी रहे हैं।

धनीलाल को पढ़ने की तीव्र इच्छा थी। हिन्दी पढ़कर गाँव की बैठक में पढ़ाने लगे और बाद में सरकारी पाठशाला में हिन्दी अध्यापक बन गए।

कड़ी मेहनत और श्रद्धा से काम किया और खेती बारी करते हुए आज एक समृद्ध व्यक्ति हैं। साथ ही साथ समाज से दूर नहीं हुए।

१९७० में तीन बुतिक आर्य समाज से सम्बन्ध जुड़ा और आज तक बना हुआ है।

हम आर्य सभा की ओर से उनकी लम्बी आयु की कामना करते हैं और परमेश्वर से विनती है कि और आने वाले लम्बे समय तक उनका सामाजिक जीवन बरक़रार रहे।

International Sustainable Performance Institute Ltd
Leveraging Human Capital

ARYA SABHA MAURITIUS

Joint ISPI /ASM

Team Building Workshop

March 7th 2014

MQA APPROVAL (in process)

(HRDC refundable)

Teamwork offers itself as a medium to empower all people to achieve their potential, collectively and individually, through the use of relevant developmental, learning, community and sports initiatives and programmes.

Our prime focus is to help our client to achieve their business goals and objectives by providing a high level of service delivery and attention to our client's needs and requirements at competitive rates.

Experiential Training inspired by :

"what I hear I forget, what I see I remember, what I do I understand"

(Confucius)

Our experienced MQA-registered Professional Trainer will focus on Team Building Spirit during the One-day Workshop

Who should attend:

- **Newly recruited staff**
- **Team leaders**
- **Educators**
- **Managers, Supervisors**

Duration : 7 hours (One full day)

Fees : Rs 5000

Venue : **LP Govindramen Vedic Centre, Trois Boutiques, Union Vale.**

The ISPI, 6 Belle Rose Avenue, Quatre Bornes, MAURITIUS,

BRN : C11100207 VAT : 27076043

Tel : + 230 957-6167, Fax : + 230 427-8890

Email : info@ispi-lhc.org Web : www.ispi-lhc.org

ARYA SABHA MAURITIUS

Arya Bhawan, 1,Maharshi Dayanand Street, Port Louis.

Tel : 212-2730; Fax : 210-3778, E-Mail : aryamu@intnet.mu, Web : www.aryasabhamauritius.mu

वेद का अनुपम सन्देश

डा० माधुरी रामधारी

ओ३म्। इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्यपयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽ आप्यायध्वमध्न्याऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवाऽअयक्षमा मा व स्तेनऽईशत माघशं सो ध्रुवाऽअस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि।

यजुर्वेद का यह मन्त्र उपदेश देता है कि हे मानव, ... **'इषे'** - अन्न प्राप्त करने के लिए और **'त्वोर्ज्जे'** - ऊर्जा प्राप्त करने के लिए, **'वायवस्थ'** - तुम्हें वायु के समान गतिशील बनना है,कर्मशील बनना है।

हे मनुष्य,..... **'देवो'** – तुम दिव्यगुणों वाला बनो, उत्तम गुणों वाला बनो। **'सविता'** – उस सविता से, उस परमात्मा से **'प्रार्पयतु'** – प्रेरित हो जाओ, ईश्वर की प्रेरणा से, **'श्रेष्ठतमाय कर्मण'**- श्रेष्ठ कर्म करो, उत्तम कार्य करो । **'आप्यायध्वम्'** - उन्नति करो। **'अध्न्या'** - पाप से मुक्त हो जाओ ।

हे मनुष्य, **'इन्द्राय भागं'** - अपने समय का एक भाग - **'इन्द्र'** - परमात्मा के लिए रखो। **'प्रजावती'** - प्रजा से युक्त हो जाओ । **'अनमीवा अयक्ष्मा'** - पेट के रोग और टी.बी. के रोग से छुटकारा पाओ। **'मा स्तेन'** चोरी मत करो। **'ईशत'**- स्वामी बनो। **'माघशं'** - पाप मत करो। **'सो ध्रुवा अस्मिन्'** - इस लोक में स्थिर हो जाओ, डगमगाओ मत। **'गोपतौ स्यात'**- सम्पूर्ण ऐश्वर्य का स्वामी बनो, **'बह्वीर्यजमानस्य'** - यज्ञ में बैठने वाले यजमानों की बहुत प्रकार से **'पाहि'** - रक्षा करो। **'पशून पाहि'** - पशुओं की भी रक्षा करो।

मनुष्य को जीवन यापन करने के लिए अन्न और ऊर्जा की आवश्यकता पड़ती है। ये आवश्यकताएँ तभी पूर्ण होती हैं, जब मनुष्य निरन्तर कर्म करता है, लगातार मेहनत करता है। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वह किसी का मुँह नहीं ताकता; किसी पर निर्भर नहीं होता । वह समझ लेता है कि उसे स्वयं हाथ-पाँव मारना है। अपने आप चलना है। **'वायवस्थ'** - वायु के समान गतिशील बनना है।

तीन मित्र पैदल यात्रा कर रहे थे। वे सुबह, सवेरे घर से निकले थे और चलते-चलते दोपहर हो गया था। तीनों मित्रों के पाँव थकने लगे । ऊपर से भूख-प्यास भी सताने लगी। तीनों मित्रों ने विचार किया कि थोड़ा आराम करते हैं और कुछ खा-पीकर चलते हैं। वे एक पेड़ की छाँव में बैठे। रोटी और पानी से उन्होंने भूख-प्यास मिटाई। आराम किया और जैसे ही उनमें थोड़ी ताज़गी आयी, वे फिर उठ खड़े हुए।

दो घण्टे लगातार चलने के बाद एक मित्र ने कहा – 'अब मुझसे चला नहीं जाता। मैं यह यात्रा नहीं कर सकता।'

दोनों मित्रों ने अपने कंधे पर उसके हाथ रखकर उसे चलने के लिए सहारा दिया। लेकिन जब उन्होंने देखा कि थका हुआ मित्र अपनी ओर से चलने की कोशिश नहीं कर रहा तब वे उस मित्र को छोड़कर आगे निकल गए।

एक घण्टा लगातार चलने के बाद दोनों मित्र मंज़िल के निकट पहुँच गए। दूसरे मित्र ने कहा थोड़ा रुकते हैं, आधा घण्टा विश्राम करते हैं, फिर चलते हैं। तीसरे मित्र ने कहा – 'देखो, आधे घण्टे में सूरज डूब जाएगा, हमारा गन्तव्य अब दूर नहीं। अगर तुम धीरज और साहस से काम लो तो सूरज डूबने से पहले हम मंज़िल तक पहुँच जाएँगे।'

दूसरा मित्र नहीं माना। उसने उत्तर दिया – 'तुम आगे बढ़ो मैं कुछ समय बाद तुमसे आ मिलूँगा।'

तीसरा मित्र आगे निकल गया। थकान से चूर-चूर हो रहा था, परन्तु चलता गया और सूर्यास्त से पहले अपने गन्तव्य तक पहुँच गया ।

हम सब किनी-न-किसी यात्रा पर निकले हुए हैं। जीवन अपने आप में एक यात्रा है। इस यात्रा में हरेक को स्वयं चलना होता है। सामने अनेक बाधाएँ प्रस्तुत होती हैं। अक्सर व्यक्ति को थकान, तनाव और निराशा भी होती है। परन्तु आगे बढ़ना ही जीवन है, रुकना मृत्यु है। प्रत्येक व्यक्ति को **'वायवस्थ'** वायु के समान गतिशील बनना है। अगर मित्र या हमारे अपने साथ न दें या साथ चलने के लिए तैयार न हों तो भी मनुष्य को गतिशील बनना ही है। वेद मंत्र कहता है – **'सविता प्रार्पयतु'** - हे मनुष्य, तुम उस सविता से, उस परमात्मा से गतिशील बनने की प्रेरणा प्राप्त करो। यही प्रेरणा तुम्हें एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाएगी।

एक नन्हा सा अंकुर मोटी चट्टानों के बीच सिर निकालकर आँखों में उत्सुकता भर कर झाँक रहा था आसमान को। अंकुर ने सिर उठाने का साहस क्या किया? तन गई मोटी चट्टानों की भौहें। कहने लगी चट्टानें – 'क्या यह कल का जन्मा हमारे बीच सिर उठाएगा ?'

अंकुर चाहता था बढ़ना, पर उसे मोटी चट्टानों से सहयोग न मिला। अंकुर के भीतर थी जीवन की लालसा, संघर्ष करने की क्षमता। उसने जीवन-शक्ति जुटाई। देख ली चट्टानों की निर्ममता। पर उसने धैर्य न खोया। पाँव जमाकर धरती पर धीरे-धीरे आया ऊपर, फिर बढ़ता रहा उन्नति की राहों में अविचल। आज देखती चट्टानों उसे। वही छोटा अंकुर, फूल-फलकर है लहराता। गर्व करता अपनी जीवन-शक्ति पर, खुश होता संघर्ष करने की अपनी शक्ति पर।

ज़रा सोचिए, संघर्ष करने की अविरल शक्ति अंकुर को कहाँ से प्राप्त हुई? ज़रा सोचिए विघ्नों से घिरा मनुष्य ऊपर उठने की शक्ति कैसे पाता है? अंग्रेज़ों के दमन-चक्र को परास्त करने की शक्ति महात्मा गांधी जी को कैसी मिली? अन्धविश्वास के कारण भारत की बिगड़ी हुई छवि को सँवारने की प्रेरणा स्वामी दयानन्द को कहाँ से प्राप्त हुई! अमेरिका में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय धर्म-सम्मेलन में हिन्दू धर्म का ध्वज ऊँचा करने की प्रेरणा स्वामी विवेकानन्द को कहाँ से प्राप्त हुई?

जॉन ऑफ आर्क गाँव की लड़की थी। उसने घर की दहलीज़ कभी पार नहीं की थी, परन्तु फ्रांस को उन्नत करने के लिए वह फ्रांसीसी सेना में जा पहुँची और सेनापति बन उसने फ्रांस की हारी हुई जनता को विजयी बना दिया। गाँव की अनपढ़ लड़की फ्रांस की सेनापति बन जाए, यह विचित्र जान पड़ता है, परन्तु इस विचित्रता के पीछे वही शक्ति, वही अन्तः प्रेरणा कार्य करती है, जो वेद के अनुसार **'सविता प्रार्पयत'** – सविता द्वारा, परमात्मा द्वारा प्राप्त होती है और इसी प्रेरणा से मनुष्य **'श्रेष्ठतमाय कर्मणे'** – श्रेष्ठ कर्म करता है।

शेष भाग पृष्ठ ३ पर

स्वर्गीय श्री देवन दलीप

पंडित माणिकचन्द बुद्धु

कुछ सप्ताहों से वह अचानक बहुत अस्वस्थ हो गये। विदेश में बसे ज्येष्ट पुत्र को सपरिवार बुला लिया गया। मोर्सेल्मा आर्य समाज ने उनके घर पर तथा समाज में उनकी स्वास्थ्य-रक्षा निमित्त यज्ञ का अनुष्ठान किया और प्रार्थनाएँ कीं।

परन्तु स्वास्थ्य में सुधार नहीं आया। उनको अनुभव हो गया कि अब काया के सुधरने की कोई उम्मीद नहीं। उन्होंने समाज के लोगों को घर पर बुलाया। उनसे अनुरोध-पूर्ण प्रार्थना की उनके घर पर लगातार वेद मन्त्रों का पाठ हो।

पं० सुमन रामचरण, समाज के प्रधान श्री मेघराज जी तथा मन्त्री श्री रामधनी जी अन्य सदस्यों तथा सदस्यों के साथ कई दिनों वेद मन्त्रों द्वारा प्रार्थनाएँ कीं। उनके अंतिम दिनों में उनका घर वेद-मन्त्रों के पावन पुनीत गुंजन से गुंजित हुआ।

और वेद-मन्त्रों की ध्वनि से ध्वनित दिव्य वातावरण में उन्होंने अपने परिवारों की उपस्थिति में अपने प्राणों का उत्सर्ग किया।

यह था एक कट्टर आर्य समाजी और दयानन्द के एक अनन्य भक्त के देहावसान का संक्षिप्त विवरण।

स्व० श्री देवन दलीप जी कौन थे ?

व्यवसाय से एक कुशल बढ़ई थे। इसी शिल्प के माध्यम से उन्होंने घर-परिवार का निर्माण किया। बच्चों को पढ़ाया लिखाया और उन्हें अपने पाँवों पर खड़े होने का अवसर दिया। सभी बच्चे सफल गृहस्थ-जीवन का लाभ उठा रहे हैं। उनकी धर्म पत्नी देवी-स्वरूप बनकर उनके जीवन की सफलता का आधार बनी।

स्वर्गीय श्री देवन दलीप जी तथा उनकी धर्म पत्नी दोनों अग्निहोत्री थे और अपने बच्चों को यज्ञ प्रेमी बनाया। विदेश में रहते हुए भी उनका ज्येष्ठ पुत्र परिवार सहित अग्निहोत्री हैं।

स्व० श्री देवन जी मोर्सेल्माँ आर्य समाज के साथ दशकों से जुड़े रहे। समय समय पर प्रधान तथा मान्य प्रधान बनकर समाज को अपने प्रेरणा पूर्ण नेतृत्व से एक कुशल और योग्य संगठन का रूप दिया।

आज मोर्सेल्माँ आर्यसमाज एक आधुनिक और प्रगतिशील शाखा के रूप पाम्प्लेमूस आर्य ज़िला की प्रमुख समाजों में अत्यन्त सक्रिय समाज है। आर्य सभा के अधिकारी, आर्य संन्यासी तथा विद्धान्-विदूषी यहाँ अनेकों बार सम्मानित होते रहते हैं और उस समाज को शुभाशीर्वाद देते रहते हैं।

इस कार्य में श्री स्व० देवन दलीप जी का प्रमुख हाथ रहा है। यह परम संयोग की बात रही कि स्व० श्री देवन दलीप जी का अंतिम संस्कार श्री स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस की पुण्य तिथि को सम्पन्न किया गया।

पाम्प्लेमूस प्रान्त के आर्य ज़िला परिषद् के पुरोहित-पुरोहिताओं वेद-मन्त्र पाठ भजन-कीर्तन तथा सम्वेदना के सन्देशों से शोकातुर परिवार को अच्छी प्रकार सम्भाला। श्री देवन जी की अंत्येष्टि वरिष्ठ पुरोहित पं० माणिकचन्द बुद्धु के मार्गदर्शन में पंडिता पार्वती लक्ष्मण तथा पंडिता विद्यानी मुकराम एवं पं० बुझावन (जो स्व० देवन दलीप जी के समधी-भाई हैं) के विशेष सहयोग से स्व० जनों के बीच सम्पन्न हुई।

ईश्वर से प्रार्थना है कि श्री स्व० देवन दलीप जी की आत्मा को शान्ति प्राप्त हो और उनके पीछे छूटे परिवार का धैर्य प्रदान करे।

सफलता के पाँच मूल सूत्र

*मन में कार्य करने की **तीव्र इच्छा***
*कार्य करने के लिए **पर्याप्त साधन***
*साधन का प्रयोग करने की **यथार्थ विधि***
*अन्तिम परिणाम आने तक **पूर्ण पुरुषार्थ***
*बाधकों को सहन करने हेतु **घोर तपस्या***

आर्य सभा मोरिशस

के तत्वावधान में

मोका आर्य ज़िला परिषद्

एवं

समस्त आर्य परिवारों की ओर से

दिनांक २७ फरवरी २०१४ –

27th February 2014

को प्रातः १०.०० से १२.०० बजे तक

लावेनिर आर्य मंदिर के प्रांगण में

राष्ट्रीय स्तर पर

ऋषि बोधोत्सव भव्य रूप से आयोजित किया जाएगा। अपने हित, मित्र के साथ भारी संख्या में पधारने की कृपा करें।

नोट : उक्त कार्यक्रम को टी.वी पर सीधा प्रसारित किया जाएगा।

तरेगा तो वही जिसका हृदय प्रभु का घर है ।

पंडित जीवन महादेव आर्योपदेशक

(१) गंगा में नहाने से जो, पापी नर तर जाय ।
मीन क्यों न तरे कभी, जिसका जल ही घर है ।।

(२) मुंड के मुड़ाने से जो, पापी नर तर जाय ।
भेड़ क्यों न तरे कभी, जिसके मुण्डे सब धड़ है ।।

(३) जटा के बढ़ाने से जो, पापी नर तर जाय ।
मोर क्यों न तरे कभी, जिसके लम्बे पर हैं ।।

(४) शंख के बजाने से जो, पापी नर तर जाय ।
गधा क्यों न तरे कभी, जिसका शंख-सा स्वर है ।।

(५) तिलक के लगाने से जो, पापी नर तर जाय ।
हाथी क्यों न तरे कभी, जिसका लगता सेंदूर है ।।

ओ३म्। इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्यपयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽ आप्यायध्वमध्न्याऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवाऽअयक्षमा मा व स्तेनऽईशत माघशं सो ध्रुवाऽअस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि।

पृष्ठ २ का शेष भाग

परमात्मा द्वारा प्रेरित व्यक्ति कभी श्रेष्ठ कर्मों को नहीं टालता। वह उत्तम कार्य को बीच में नहीं छोड़ता। विद्यार्थी तभी अधिक पढ़ता है जब उसके भीतर प्रेरणा जागती है। चित्रकार चित्रपट पर असाधारण दृश्य तभी उतारता है, जब वह अन्तः प्रेरित होता है। लेखक की कलम तभी चलती है, जब वह भीतरी प्रेरणा की अनुभूति करता है। यह भीतरी प्रेरणा ही ईश्वर प्रदत्त प्रेरणा है, जिसे पाकर **'आप्यायध्वम्'** – मनुष्य उन्नति करता है, संवृद्धि प्राप्त करता है।

परंतु यह अद्‌भुत प्रेरणा वही पाता है, जो निरंतर प्रयास करता है। प्रयास के क्षणों में व्यक्ति के भीतर अचानक एक बिजली कौंध जाती है, एक ज्योति उत्पन्न होती है, जिससे मनुष्य श्रेष्ठ कर्म कर पाता है। यह बिजली या ज्योति ही ईश्वर की प्रेरणा है। कर्म के प्रति लगन रखने वाला व्यक्ति ही ईश्वर से प्रेरित होता है।

एक ओर ईश्वर ने मनुष्य की रचना की तो दूसरी ओर पशु-पक्षियों की रचना की। पशु-पक्षी अगर श्रेष्ठ कर्म न करें तो उन्हें दोष नहीं दिया जा सकता, क्योंकि उनके पास न हाथ है, न वाणी है और ना ही बुद्धि। ईश्वर ने पशु-पक्षियों को भोग योनि में भेजा, इसलिए पशु-पक्षी भोग कर के ही मर-मिट जाते हैं। मनुष्य के पास हाथ भी है, वाणी भी है और बुद्धि भी है। मनुष्य से अगर ईश्वर पूछे कि तुमने श्रेष्ठ कर्म क्यों नहीं किया? तो मनुष्य क्या उत्तर देगा। कर्म ही तो उसका आभूषण है। माँगकर खाना किसी को शोभा नहीं देता। जो ईश्वर से माँगता है, उससे ईश्वर कहते हैं – 'तुम में योग्यता है, संसार में जीना है तो माँगना छोड़ो, कर्म करो।' व्यक्ति अगर समझदार होता है तो वह हाथ जोड़कर प्रार्थना करता है – 'हे सविता, हे प्रभु, मुझे शक्ति प्रदान करो, ताकि मैं **'वायवस्थ'** – वायु के समान गतिशील बन सकूँ, कर्मशील बन सकूँ, **'मा स्तेन'** – चोरी न करूँ, **'माघशं'** - पाप से मुक्त हो जाऊँ और **'सो ध्रुवा अस्मिन्'** - इस लोक में स्थिर हो जाऊँ **'यजमानस्य'** - यजमान बन सकूँ और **'पाहि'** - सब की रक्षा करूँ, **'पशून पाहि'** और पशुओं की रक्षा कर सकूँ ।

आवश्यक सूचना

इच्छुक छात्र-छात्राओं को सूचित हो कि गुरुवार १६ जनवरी २०१४ से 'धर्म भूषण', 'धर्म रत्न' और नई परीक्षा 'सिद्धान्त वाचस्पति' की पढ़ाई शुरू हो गई है ।

दिन : **प्रति वृहस्पतिवार और शनिवार ।**
समय : **साढ़े बारह से साढ़े चार तक ।**
स्थान : **डी.ए.वी. डिग्री कॉलिज ।**

अर्हताएँ

धर्म भूषण परीक्षा के लिए :

(i) हिन्दी साहित्य सम्मेलन की प्रथमा परीक्षा में उत्तीर्ण
(ii) अजमेर से 'विद्या विशारद परीक्षा में उत्तीर्ण,
(iii) कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से S.C. में हिन्दी और हिन्दुइज़्म में उत्तीर्ण अथवा
(iv) 'सिद्धान्त रत्न' परीक्षा में उत्तीर्ण

धर्मरत्न परीक्षा के लिए :

(i) मध्यमा परीक्षा में उत्तीर्ण,
(ii) H.S.C में हिन्दी और हिन्दुइज़्म परीक्षा में उत्तीर्ण अथवा
(iii) धर्म भूषण परीक्षा में उत्तीर्ण

'धर्म वाचस्पति' परीक्षा के लिए :

धर्म रत्न/विद्यावाचस्पति/सिद्धान्त शास्त्री, *अथवा* उत्तमा में उत्तीर्ण छात्र-छात्राएँ

'धर्म वाचस्पति' परीक्षा के लिए पाठ्य पुस्तकें -

प्रथम प्रश्न पत्र - वैदिक सिद्धान्त पर आधारित

पाठ्य पुस्तकें : व्यवहार भानु एवं प्रश्नोपनिषद्

द्वितीय प्रश्न पत्र - अनुवाद पर आधारित - संस्कृत से हिन्दी

पाठ्य पुस्तकें : (i) आर्याभिविनय (ii) योगदर्शन (iii) विदुर नीति

तृतीय प्रश्न पत्र - कर्मकाण्ड पर आधारित

पाठ्य पुस्तकें : (i) संस्कार विधि (ii) संस्कार चंद्रिका (iii) यजुर्वेद

चतुर्थ प्रश्न पत्र - भाषा पर आधारित

पाठ्य पुस्तकें : (i) हिन्दी व्याकरण (ii) निबंध पीयूष

पंचम प्रश्न पत्र - संस्कृत

संज्ञा-सर्वनाम शब्द रूप, लिंग-वचन, क्रिया, संधि एवं समास

पाठ्य पुस्तकें - (i) *सरल संस्कृत - आचार्य सोमवेद शास्त्री*
(ii) *संस्कृत पाठ्य पुस्तकें भाग १, २ और ३ – डॉ० कपिलदेव द्विवेदी*

कृपया डी.ए.वी कॉलिज की सचिव श्रीमती निर्मला सुकर जी को अपना आवेदन पत्र भेजिए । पता है – *D.A.V. Degree College, M2 Lane, Avenue Michael Leal, Pailles*
Tel No. : 57601105

World Vedic Conference in Durban Crowned with Success

Indradev Bholah Indranath, P.B.H

"That action is best which procures the greatest happiness through good deeds."

Francis Huchinson

The World Vedic conference held in Durban, South Africa under the auspices of Arya Pratinidhi Sabha (S.A) from 28th November to 1st December 2013 was a real success. The theme of the conference was "Bringing Wisdom of the Vedas to you."

The conference was attended by over 200 delegates hailing from several countries : India, America, New Zealand, Holland, Canada, Malaysia, Guyana, Surinam, Kenya, Uganda, Mauritius and from South Africa. The Mauritian delegation composed of 32 participants was headed by Mr Ravindrasingh Gowd of Arya Sabha Mauritius. I (writer of the article) the Secretary Aryodaye Press Committee too participated. We got the golden opportunity to hear well versed scholars on Vedas and Vedic principles like Swami Agnivesh, Swami Aryavesh, Prof. Usha Desai, Dr Bisram Rambilas, Acharya Baldev, Dr Satish Prakash, Rajsingh Arya, Prof. Kapil Satyapal, Dr Dori Moodley, Prof. Brij Maharaj, Dr Megandhren Govender, Prof. Divya Singh.

The venue of the conference was the spacious city hall of Durban which was packed to capacity all four days of the conference. All the talks and cultural items were projected on two big screens.

The inaugural ceremony held on Thursday 28th November 2013 started at 6 p.m. with prayer and lighting of lamp by Prof. Usha Desai, President of Arya Pratinidhi Sabha, S.A. Prof. Usha Desai's welcome address was impeccable. Dr Bisram Rambilas, the key person of the conference, spoke in Hindi, Bhojpuri and English. He related the story of the hard times of the indentured labourers. He mentioned the names of Swami Bhawani Dayal, Bhai Parmanand and Pt. Narendra Vedalankar whose efforts for the preservation for the Vedic culture and the Hindi language and Hindu Dharma were remarkable.

There were addresses by Mayor Hon. James Nxumalo, Hon. Cyril Ramphosa, Shri Virendra Gupta, High Commissioner in South Africa, Mr Ashwin Trikamjee, President of South Africa Hindu Maha Sabha, Acharya Baldev and Swami Agnivesh. The cultural items presented during the conference were of a high standard.

The conference on Friday 29th November had 4 sessions presided by Acharya Baldev and Prof. Usha Desai. Session 1 -- On the Impact of Arya Samaj, Session 2. – Subject : Vedic Mantras, Session 3 – Subject : Hindu Unity, Session 4 - Subject : Vedic Style Life.

The speakers put forward their arguments very convincingly. The main speakers were : Nirode Bramdaw, Dr Rambilas, Usha Debopersad, Aarti Shanand, Praveen Pathak, Dr Vishwa Mahadeo. Swami Aryavesh, Jay Balwanth, J.P. Rambilas, Dr Tej Maharaj, Dr Kogielam Keerthi Acharya, Pt. Mahendra Dayal and Ravindrasingh Gowd, and Mr Kamal Nayan Domah from Mauritius.

Shri Brij Maharaj, President of Sanatan Dharma Sabha addressed the gathering on Saturday 30th November 2013. The Bahukund Yajna (200 kunds) was held at Rydelvale Grounds / Phoenix) from 11h00 to 13h00. Before the Yajna there was a Shobha Yatra/Procession of several miles.

On Sunday 1st December 2013 there were 4 sessions.
Session 1 – Science in the Vedas :
Chairperson : Ravindrasingh Gowd of Mauritius
Session 2 – Medical Challenges :
Chairperson Prof. Kapil Satyapal
Session 3 – Social Challenges :
Chairperson Swami Agnivesh.
Session 4 – Resolutions : Dr Rambilas

There were thought-provoking discussions.

The chairman of Mauritius Shri Ravindrasingh Gowd was introduced by Dr Rambilas. He spoke on Astronomy v/s astrology.

Shri Rahul Chowdhary talked on the astronomy in the Vedas. Prof. Kapil Satyapal talked on infertility and organ donation. Swami Agnivesh's talk centered on abuse of organ transplantation, Dr Dori Moodley on Hinduism and enthanasia (easy death). Mrs Mila Dhanuckchand talked on Demystifying sex energy for 3rd millennium.

Dr Vidya Sharma of USA, and Pratheela Singh were also among the speakers.

Some of the important resolutions taken among others were : (i) to foster the link among Arya Samajists of all countries, (ii) to support voluntary enthanasia and the donation of body organs, (iii) to encourage the performance of the sixteen sanskaras (iv) the Vedic priests to re-double their efforts to spread the Vedic principles etc.

On Monday 2nd December 2013 an interesting cultural programme was held with the participation of Sangeet Vidya Institute, South Africa and foreign delegates. Dinner was served on that occasion.

Some Reflections Around the Festive Season

Sookraj Bissessur, B.A., Hons.

"Doing good to the whole world is the primary object of this society – i.e. to look to its physical, spiritual and social welfare"
Sixth Principle of Arya Samaj

1. The good teacher is always learning *(Maharshi Dayananda Saraswati)*
2. Man's great need today is security.
3. Modern man must learn to cope with the very rapid change.
4. All politics is a struggle for power.
5. The past is where you learned the lesson. The future is where you apply the lesson.
6. There is no key to happiness. The door is always open. *(Mother Theresa)*
7. The only way to do great work is to love what you do. If you haven't found it yet keep on looking. Don't settle. As with all matters of the heart, you'll know when you find it. *(Steve Jobs)*.
8. A good apology has three parts :-- (1) I'm sorry (2) It's my fault. (3) What can I do to make it right?
9. Without health, life is not life, it is lifeless.
10. Home is the girl's prison and the woman's work house. *(George BernardShaw)*
11. Pollution of the environment is Man's greatest nightmare. *(Maharshi Dayananda Saraswati, including theVeda)*
12. Education is a life-long process.
13. Not by bread alone doth Man live. *(The Holy Bible)*
14. Happiness does not depend on money only.
15. Modern man – has no time to stand, care and stare at Nature.
16. A man without education – is a man without future.
17. Eating and Smoking :- Two ways to die.
18. Life is more interesting if we keep our eyes and ears wide open.
19. Marriage must be treated as a serious sacred institution not as a mere pass time.
20. Young people should not be afraid of the impending future.
21. Excessive violence is a distortion of everyday reality.
22. The real charm in any play of William Shakespeare lies not in the plot of the story, but in the dialogue and observation of life and strife.
23. In the end the only reason, why I can stand and smile through all my problems and pain, is because I know I have God the Almighty on my side.

Create a Culture of Kindness

Kindness is one of the most important human characteristics. It is not that hard to say a simple 'thank you', and yet it can really change the outlook of someone else's day. Life is made up, not of great sacrifices or duties, but of little things, in which smiles and kindnesses and small obligations are what win and preserve the heart, and secure comfort.

Kindness is a behaviour marked by ethical characteristics, a pleasant disposition, and concern for others. It is known as a virtue, and recognized as a value in many cultures and religions. The act of kindness does not only benefit the receivers but also the giver.

Kindness is defined as virtue. It is defined as being helpful towards someone in need, not in return for anything, nor for the advantage of the helper himself, but for that of the person helped.

The world needs more kindness. Without kindness the world would be somewhere we wouldn't want to be. I think kindness is the most important value that this world has to offer because it can bring a whole bunch of people together. For those who have lost their loved ones or whose families live far away and for destitute and poor, a simple act of kindness to reach them in any form can make the biggest difference to make someone's day better. Kindness towards all other living beings should be a recognizable trait in whatever bodies' character and culture"

One in four people admit they cannot remember the last time they helped someone else in need while all but a tiny minority routinely go through a day without showing any form of kindness.

"It takes more muscles to frown than to smile." Remember there's no such thing as a small act of kindness. Every act creates a ripple with no logical end.

Raj Sobrun *(Source Internet)*

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1, Maharshi Dayanand St,
Port Louis, Tel: 212-2730,
208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu

प्रधान सम्पादकः डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी.,ओ.एस.के,आर्य रत्न
सह सम्पादक : सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के.,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी,*पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर,*पी.एम.एस.एम, आर्य भूषण, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा,*पी.एम.एस.एम*

Printer : BAHADOOR PRINTING LTD.
Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

OM

ARYA SABHA MAURITIUS

Circular to all the Secretaries of Arya Samajs & Arya Mahila Samajs

ANNUAL RETURNS & COMPILATION OF REGISTER OF REPRESENTATIVE MEMBERS : YEAR 2014-2015

In view of the forthcoming Annual General Meeting of Arya Sabha Mauritius (the Sabha) scheduled to be held before end of March 2014, the Secretaries of the branches of the Sabha (Arya Samajs & Arya Mahila Samajs) are hereby requested to attend to the following :

1.0 The Annual General Meeting of the Samaj should imperatively be held by 31 January 2014 and the agenda to include:

1.1 The approval of the minutes of proceedings of the last Annual General Meeting of the Samaj;

1.2 The Annual Reports of the President and/or Secretary on the activities of the Samaj;

1.3 The Treasurer's Report, i.e. Statements of (a) Income and Expenditure, (b) Assets and Liabilities, and (c) Inventory Form;

1.4 The Programme of Works of the year 2014;

1.5 The Estimate Budget for the year 2014; and

1.6 The Election of Office Bearers, the appointment of auditors and Representative Members (as applicable.)

2.0 The annual returns as per forms [DC13/01 to 05] sent through the respective pundits of the district along with a copy of the bank statements for the period ending 31.12.2013 should reach the Office of the Sabha by Saturday 8 February 2014, the latest.

3.0 Notes:

3.1 *The Annual General Meeting of the Samaj is to be held under the supervision of the Purohit / Purohita designated to coordinate the activities of the Samaj.*

3.2 *The Purohit / Purohita should be notified at least 10 days prior to the meeting.*

3.3 *The minutes of proceedings of the meeting and the annual returns should be countersigned by the said Purohit / Purohita.*

3.4 *Only compliant members, i.e. those who are not in arrears with the subscriptions as at 31.12.2013, would be allowed to participate at the said meeting.*

3.5 *The Samaj should ensure payment of the chatoorthanse (annual subscription) directly to the Sabha, such amount is calculated on the number of members inscribed on the annual returns. As per the revised rules and regulations of the Arya Sabha 'every Samaj shall annually pay one tenth of the subscription fee collected from the total number of its members'.*

3.6 *The updated lists and returns would serve for the purpose of compiling the list of Representative Members who would be allowed to participate at the forthcoming Annual General Meeting of the Sabha.*

3.7 *Any Samaj who fails to submit the said returns [DC13/01 to 05] in the appropriate format and forms by the 08.02.2014 and/or is in arrears with the payment of its annual subscription to the Sabha would be considered as non-compliant.*

3.8 *It would be highly appreciated if a key office bearer (President or Secretary or Treasurer) could call at the Sabha for the purpose of filing the annual returns, which would be verified at that instant, thus ensuing compliance to the above.*

We trust that the office bearers of the Samaj would duly take cognisance of the above and act accordingly.

H. Ramdhony
Secretary